अध्याय - 6

मॉरीशस म नाटक विधा का विकास-

मॉरीशस म उपन्यास, कहानी, कविता और नाटक म भी अधिक विकास हआ है। मॉरीशस म नाटक भी दूसरी विधाओं के समान अधिक सशक्तधारा मानी जा सकती है।

नाटक का प्रारंभ २० वॉ शताब्दी के लगभग 5 व दशक म होता है लेकिन नाटक को विशेषताओ को दृष्टि से जब देख तो अधिक सफल माने जा सकते ह। आस्तानंद सदासिंह का मनना है कि –"यह हमारा रंगमंच हमारी जैसे हमारी संस्कृति है वैसे ही नाटक भी हमार अप्रवासी पूवर्जा को देना म से एक है।"(1)

नाटक के प्रारंभ म निम्नलिखित रूपा से नातक को प्रस्तुती को जाती थी उसका स्वरूप-

"1. भारतीय आप्रवासी समाज द्वारा खुले मंच पर नाट्य प्रस्तुति

2. नाटक एवं रंगमंच के प्रति आय समाज को उदासीनता

3. पारसी व्यावसायिक थियेट्रिकल कंपनी और नाटक मंचन

4. 'रेडियो' और 'सिनेमा हॉल' म नाट्य प्रस्तुति

5. टी.वी के प्रचार-प्रसार द्वारा नाट्य प्रस्तुति

6. विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं पारिषदा द्वारा नाट्य प्रस्तुति।" (2)

1. भारतीय आप्रवासी समाज द्वारा खुले मंच पर नाट्य प्रस्तुति-

भारतवंशी लोग अपने दु:ख दर्दा को मिटाने के लिए मनोरंजन हेतु नाटक का सहारा लेता है। चारा ओर कठिन पारिस्थितिया म जी रहे मजदूर त्रस्त थे जीवन से ऊब चुके थे। भारतीया ने अपने वतन को यादा म उत्सव और पर्वा को जिंदा रखा रात्रि के समय म उन्होने रामायण, महाभारत, पुराणा को कथा के आधार पर नाटक मंचन (खेलना) आरंभ शुरु किया। प्रारंभिक नाटका म पुरुष ही पुरुष के पात्र और स्त्री के निभाने लगे। लोगा को मनोरंजन मिलने लगा। प्रारंभिक काल म लगभग 80 जितनी संस्थाओं के माध्यम से नाटक के मंचन होते थे। सन् 1924 म त्रिचोले म सत्य हरिशचंद्र, सूरदास, सावित्री आदि यादगार नाटक खेले गये आज तक लोग याद करते ह अधिकत्तर नाटक का मंचन खुले मे होता था और शुभ प्रसंग यानी शादी-विवाह या उत्सवा के दिन होता था।

2. नाटक –एवं रंगमंच के प्रति आय समाज को उदासीनता-

नाटक के विषय सदैव पौराणिक आख्यान और पवित्र कथाओं के आधार रहते थे उस समय मॉरीशस म आयसमाज को भी कायरत रहती है। लेकिन नाटका के विकास के लिए अधिक उत्साह नहीं दिखाई देता।

3. **पारसी व्यावसायिक कंपनी और नाटक मंचन-**

"पारसी रंगमंच वो शुद्ध रूप से व्यावसाय पर आधारित था। कहा जाता है कि वाजिद अलीशाह की प्रेरणा से अभिनीत 'इंदर सभा' की आशातीत ख्याति ने पारसी थियेट्रिकल कंपनियों को जन्म दिया। पारसी रंगमंच बल्लियों, तख्तों और बांसों से बनाया जाता था। दृश्य-विधान म पद मुख्य थे। एक के पीछे एक अनेक पद "मंच पर लगे रहते थे। ये पद अपनी तडक- भडक के लिए प्रसिद्ध थे। पारसी थियेटर के लिखे गये नाटकों म आंधी, बीजली, आग, आकाश-माग से देवी-देवताओं के प्रकट होने, चीर-हरण और उसके निरंतर बढते जाने, गोद म कटे सिर पहचने, सिर के टुकडे-टुकडे होकर फतने, तारे टूटने आदि के रंग-निदश प्राप्त होते ह।(3)

इस काल म जनता की रुचि के अनुसार रचे गये जो धीरे धीरे व्यावसायिक रूप पकडते ह।

4. रेडियो और 'सिनेमा होल' म नाट्य प्रस्तुति

पारसी नाटक के बाद साहित्यिक नाटकों की शुरुआत होती है। सन् 1940 म रेडियो के माध्यम से साहित्यिक नाटकों के आरंभ भी व्यवस्था हई। श्री जयनारायण राय, ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' शिव, गोविंद शमा, सोमदत्त बखौरी, डी. के. जानकी और एल.वी. रामयाद इन भारतीय लेखकों की कहानियों पर आधारित एकांकी बनाई और रेडियो पर नये ढंग से प्रस्तुत करने लगे।

एल.पी. रामयाद के 'मेरा तोता' नामक नाटक 1950 म सिनेमा हॉल म मंचित हआ। ब्रजद्र भगत ने 'आदश बेटी' का मंथन किया। 1954 म अभिमन्यु अनत के प्रयासो से 'परिवतन' का मंचन त्रिओले के मंदिर म हआ। 1954 से 1960 तक अभिमन्यु अनत ने एक दजन से भी अधिक नाटकों का मंचन मॉरीशस म किया। हिंदी का प्रसिद्ध अंधेर नगरी की प्रस्तुतिकरण जनादन कालीचरण ने किया। रवींद्रनाथ टैगोर शताब्दी के अवसर पर भी कई नाटकों का मंचन किया गया।

5**. टी.वी के प्रचार-प्रसार द्वारा नाट्य प्रस्तुति-** मॉरीशस म टी.वी. की स्थापना 1965 म हई जिससे नाटक के लिए सफलता का एक आसमान मिला।

विभिन्न संस्थानों के माध्यम से नाट्य प्रस्तुति होने लगी प्रमुखत: संस्थाएं- 'अजंता आट्स', 'हिंदी लेखक-संघ', 'गुड लस कला-निकेतन', 'बोनाकई रामकृष्ण संघ' 'त्रिओले प्रभात संघ', 'बाबू युवक संघ' 'अध्यापक प्रशिक्षण महा विधालय', 'हिंदी परिषद', 'आरनोवा सकल', 'मॉरीशस कला कद्र', आदि अनेक संस्थाओं ने समय-समय पर मॉरीशस के लेखकों के और भारतीय लेखकों के नाटकों का मंचन किया।

मॉरीशस का प्रथम हिंदी नाटक 1941 म श्री जयनारायण राय का 'जीवन-संगनी' नाटक ह।

मॉरीशस के हिन्दी नाटकों का काल-विभाजन- प्रमुख दो भागों म नाटक को विभाजित किया है- 1. स्वतंत्रता पूव नाटक 2. स्वातंत्र्योत्तर नाटक।

1. स्वतंत्रता पूव नाटक (1968 से पूव)

मॉरीशस का प्रथम साहित्यिक नाटक के रूप म एक मात्र नाटक है। 'जीवन-संगनी' है। जयनारायण राय का 'जीवन-संगनी' प्रथम नाटक है।

'जीवन-संगिनी' नाटक तीन अंको म बटा हआ है। यह एक समाजिक नाटक है, प्रत्येक अंक म चार- चार दृश्य है। नाटक का वातावरण भारतीय समाज एवं मान्यताओं को दृष्टिगत हआ है। मॉरीशस के व्युपिप का दृश्य है, भारत के राजकोट गांव का दृश्य है, फिरोजाबाद का वातावरण, लंदन के दृश्य और मॉरीशस , लंदन, भारत, आगरा आदि के शब्दों का प्रयोग किया है।

भाषा को संरचना कथ्य के आधारित है। जब उसके उद्देश्य को बात करे तो मॉरीशस के युवकों को सामाजिक मयादाएं, संस्कृति और मानवीय मूल्यों और सामाजिक मूल्यों को छोड रहे युवकों बयाना है। 'जीवन-संगिनी' का मंचन सन 1955 म हआ।

2. स्वातंत्र्योत्तर नाटक- (1968 से अब तक)

मॉरीशस म स्वतंत्रता के पश्चात नाटक साहित्य म अभिमन्यु और आस्तानन्द द आदि का योगदान सबसे पहले आता है।

अभिमन्यु अनत-

अभिमन्यु अनत का साहित्य यात्रा को शुरुआत नाटक से ही मानी गई है। उन्हों ने कहा है कि ' मेरी रचना रेडियो नाटिका थी' 'परिवतन' नाटक से एक नई दिशा मिली। "मॉरीशस म परम्परागत नाटक का युग समाप्त हो चुका था। राजा हरिशचंद्र और रामायण, महाभारत संबंधी नाटकों का उस समय बोलबाला था। उस परम्परा को समाप्ति के कोई बीस-पच्चीस साल बाद मने हिंदी रंगमंच को जीवन देना चाहा। आधुनिक समस्याओं पर नाटक लिख कर प्रस्तुत करने से पहले म झिझकता रहा कि कहाँ उन धामिक नाटकों के दशक उन्ह गलत न करार दे लेकिन जिस दिन गिओले के शिवालय के प्रागंण मे मने 'परिवतन' नाटक से एक नई दिशा मिली। "मॉरीशस म परम्परागत नाटक का युग समाप्त हो चुका था। राजा हरिचंद्र और रामायण, महाभारत संबंधी नाटकों का उस समय बोलबाला था। उस परम्परा को समाप्ति के कोई बीस- पच्चीस साल बादबाद मने हिंदी रंगमंच को जीवन देना चाहा। आधुनिक समस्याओं पर नाटक लिख कर प्रस्तुत करने से पहले म झिझकता रहा कि कहाँ उन धामिक नाटकों के दशक उन्ह गलत न करार दे लेकिन जिस दिन गिओले के शिवालय के प्रागंण मे मने 'परिवतन' नाम से अपना पहला नाटक प्रस्तुत किया, उस दिन हजारों दशको ने नियमित नाटक को मांग को।" 4 आगे कहते ह कि "फिर रेडियो के लिए भी कुछ नाटक लिखे और उन्ह प्रस्तुत भी किया। 'अजंता मंच को और से मने स्थानीय टेलीविजन के लिए तीस से उपर नाटक लिखे, निदशन किया, और भूमिकाएं निमायी शुरु म अपने नाटकों को भूमिका, निदशन आदि सब कुछ म खुद ही करता था, क्योंकि मेरा वह विश्वास था कि नाटक के लेखन से लेकर निदशन और अभिनय तक अगर एक ही आदमी को सृजन-प्रक्रिया चले, तो बेहतर होगा, लेकिन बाद म अन्य जिम्मेदारियों ने अभिनय निदशन से मुझे बिलग कर दिया। (5)

प्रमुख नाटको म-

1. विरोध- 1977
2. तीन दृश्य- 1981
3. गूंगा इतिहास- 1984
4. रोक दो कान्हा- 1984
5. भरत सम भाई- 1990
    1. विरोध- अभिमन्यु अनत जी का प्रथम एवं संपूण नाटक है- विरोध नाटक म तीन अंक और तीन दृश्य है। व्यंग्य प्रधान नाटक है, संवादों के कारण नाटक उत्कृष्ट बन पाया है। आम आदमी को भाषा है। भाव संवेध्य और रंगमंचीय दृष्टि से एक सफल नाटक माना जा सकता है।

2. तीन दृश्य- 1981

आजादी के बाद को परिस्थिति का चित्रण इस नाटक के माध्यम से हआ है। तीन दृश्यों म तीन एकांको प्रस्तुत है लेकिन एक दूसरे से जुडकर एक दूसरे को पूरक साबित होती है।

तीनों दृश्य का पारस्परिक जुडाव है। नाटक का पहला दृश्य है 'मूंगफली का छिलका' नाटक के व्यंग्य तेवर कुछ ऐसा है कि सभी बोरियत से बचने का उपाय शायद मूंगफली खाना अथ हीन मीटिंग से कहीं ज्यादा अच्छा है। मूंगफली का छिलका अपने आप म एक पूण दृश्य के समान है। संवादों म भाषा क्रिया म हर स्थान पर व्यंग्य ही व्यंग्य है।

दूसरा दृश्य 'सोना और धूल' है। इस दृश्य म 'कुंए' को प्रतीक बनाया है। अंधी व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य किया है।

तीसरा दृश्य 'कौन हो तुम' इस दृश्य म एक तरफ सियासी चालों का पदाफाश किया तो दूसरी ओर देश म व्याप्त गरीबी, भूख और रोटी को वजह से पीडित लोगों को कथा है।

'तीन दृश्य' नाटकों म अलग-अलग कहानियो म अलग होने के बाद भी एक है नाटक को भाषा-संरचना वाक्य विन्यास, शब्द प्रयोग, वातावरण, एक-एक वाक्य म विचार और भाव, समस्या और चेतवनी देनेवाले ह।

अभिमन्यु अनत का ऐतिहासिक नाटक है। 'गूंगा इतिहास' अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों म 'लाल पसीना' 'गांधीजी बोले थे', और 'पसीना बहता रहा' आदि उपन्यासों म भारतीय आप्रवासीओं को वेदनाओं को वाचा दी है। आप्रवासीओं को वेदनाओं को वाचा दी है। आप्रवासीओं के उपर मालिकों के द्वारा ठाए गये जुल्मों को 'गुंगा इतिहास' म अभिव्यक्त हआ है।

'गूंगा इतिहास' म कुल तीन अंक है। इस नाटक का मालिकों के सम्मुख मजदूरों के ऐतिहासिक स्थितियों का, मानसिक द्वन्द्व, विद्रोद और संघष प्रक्रिया का एक दस्तावेज है। रंगमंचीयता को दृष्टि से सफल नाटक है।

मॉरीशस म भारतीय आप्रवासीयों के आगमन को जब 150 वी वषगांठ मनाई गई उस वक्त 'गूंगा इतिहास' का मंचन हआ।

'रोक दो कान्हा' (1986)

यह नाटक महाभारत कालीन प्रसंग पर आधारित एक पौराणिक नाटक है। महाभारत कालीन मुद्द को पृष्ठभूमि पर आधुनिक युग को युद्ध और शांति को समस्या के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है।

'भरत सम भाई' (1990)

अभिमन्यु अनत ने रामचरित मानस को चौपाईयों का सफल प्रयोग किया है। 'रामचरित मानस' के इद गिद घुमती कथा है। आधुनिक संदर्भ म राजनीति और राजा-प्रजा के संबंधों को कथा है। नाटक म द्वंद और तनाव के बावजूद भी भाई-भाई के संवेदात्मक संबंधों को अधिक स्थापित किया है।

मॉरीशस म आस्तानंद सदासिंह के नाटक

1. आवाज - 1977
2. तू-तू - 1979
3. थूक दिया भविष्य पर - 1981

'आवाज' नाटक म आजादी के बाद देश को राजनीति एवं व्यवस्था तंत्र पर व्यंग्य नाटक किया है। जनता के चारो और व्यापक आपा-धापी, भाई-भतीजावाद, या समाज म व्याप्त घूसखोरी कआ हो रहे शिकार जनता को अभिव्यक्त किया है।

'तू-तू' नाटक एक व्यंग्य नाटक है। "नाटक म सूत्रधार के रूप म लेखक स्वयं उपस्थित होकर 'तू-तू' का इतिहास बताता है। फ्रेंच शब्द 'तू-तू' का हिंदी 'कूत्ता' है। मॉरीशस को पृष्ठभूमि पर बोल-चाल को भाषा म 'तू-तू' का सही अथ 'चमचा' है। कुत्तों और चमचों म रखते हए इसे नाटका का रूप दिया है। "(6) नाटक का मूल उद्देश्य, सामाजिक- राजनीतिक बुराइयों का पदाफाश करना है।

थूक दिया भविष्य पर (1981)

आवाज और 'तू – तू' नाटक के बाद तीसरा नाटक 'थूक दिया भविष्य पर' है। सम सामयिक और सामाजिक विसंगतियों को नाटक म स्थान दिया है। "मॉरीशस म हिंदी का नाटक तथा रंगमंच का उद्भव और विकास बीसवीं शताब्दी के आरम्भ म ही हो गया था. आरम्भ म नाटक का प्रयोजन धामिक भावना और मनोरंजन था.आरंभ म नाटक का प्रयोजन धामिक भावना और मनोरंजन था. १९ वीं शताब्दी के अंतिम चरण म 'रामलीला', 'इन्द्रसभा', 'कृष्ण लीला'आदि. धामिक नाटकों को धूम थी. इनका मंचन धामिक पव उत्सव तथा शादी विवाह के अवसरों पर होता था. मॉरीशस म जब मुंबई को नाटक कंपनियों ने जाना शुरू किया तो खड़ी बोली का विकास हआ और नाटक एवं रंगमंच के उन्नति हई रेडियो सिनेमा के आगमन पर जय नारायण राय,

बृजद्र कुमार 'भगत' मधुकर, सोमदत्त बखौरी, जानकी और लक्ष्मण प्रसाद, रामयाद भारतीयं पर लेखकं की कहानियं पर रेडियो नाटक तथा एकांकी लिखे और उनका प्रसारण हआ सन 1954 म 'अजंता आट्स संस्था' की स्थापना की और परिवतन नाटक का मंचन त्रियोले के महेश्वर मंदिर म किया. सन 1960 तक 1 दजन से अधिक नाटकं का मंचन करवाया गया. इसके बाद 'हिंदी प्रचारिणी सभा', 'हिंदी परिषद', 'हिंदी लेखक संघ' राष्ट्रीय नाटक प्रतियोगिता के साथ मोहन महषि दंपति तथा आस्थान सदासिंह आदि ने मॉरीशस की हिंदी रंगमंच को अपनी पहचान दी और उसकी जड़े मजबूत की मॉरीशस के प्रथम प्रकाशित नाटक म जय नारायण राय की जीवन संगिनी सन 1941 उल्लेखनीय है. इसम भारतीय मयादाओं म पूण एक आदश गृहिणी का चरित्र प्रस्तुत किया गया है. अब तक प्रकाशित हए ह. उन्होंने नाटकं का निदशन किया ही है टेलीविजन के लिए कई धारावाहिक भी बनाए. अनेक नए अभिनेताओं को तैयार किया अनत के बाद आस्तानंद सदासिंह ने नाटक और रंगमंच के लिए बहत काम किया है. महेश रामजी रावण के जिया वन सात रंग एकांकी 'शीत बसंत', 'कमफल', 'एक मुट्ठी गीत' तथा 'जय चरणदास की', धनराज शंभू का 'प्रतीक्षा', 'एक नई सुबह की' एवं 'चेतना जाग उठी' ठाकुरदत्त पांडे का '5 एकांकी' तथा सीता रामयाद के 'पत्थर म लोर' एवं 'बह आंदोलन' आदि नाटक भी प्रकाशित हए और उनका मंचन भी हआ वास्तव म वसस के भारतवंशिओं की हिंदी नाटक एवं रंगमंच प्रेम ने इसे एक सशक्त विद्या के रूप म जीवित रखा है वहां आज भी वाषिक हिंदी नाटक प्रज्ञा प्रतियोगिता होती है और सैकड़ं दशक उन्ह देखते ह."(७)

मोरिशियस हिंदी रंगमंच -

मॉरीशस म हिंदी रंगमंच के संदभ म ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से देखा जा सकता है सन 1934 म दास प्रथा का उन्मूलन हआ लेकिन भारत से बाहर मॉरिशस जैसे टापू पर शत बंदी मजदूरं को लाया गया ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन चलाओ गिरमिटिया मजदूरं की यही स्थिति रही उनके साथ 10 से भी अधिक प्रताड़ित किया जाता था . बैठका से ही धम और पौराणिक कथाओं पर आधारित नाटकं की शुरुआत हई. समाज म बैठका ओं के वाषिकोतसव म एकांकी भी मंथित होने लगे. वह समय था जब बिजली गाँवं में या देश म कहीं भी नहीं पहंची थी.

:- संदभ सूची:-

1. श्री आस्तानंद सदासिंह : प्राश्निक सवक्षण का उतर- 8-1-91
2. मॉरिशस म हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास: डॉ.श्यामधर तिवारी : पृ.223
3. प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना: डॉ. गोविंद चातक: पृ. 273-274
4. एक बातचीत: अभिमन्यु अनत: पृ. 103
5. आत्मविज्ञापन पृ. 83
6. तू-तू दो शब्द- पृ. 9
7. संपादक :कमल किशोर गोयनका: प्रवासी साहित्य जोहांस बग से आगे: प्रकाशक: विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लोक : नई दिल्ली: ११००११ : पृष्ठ: ३१-३२